दिनांक :- 17-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय, खंड प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र - चतुर्थ

एकाई :- दो - प्रथम अफीम युद्ध (1839)

प्रारम्भ में व्यापार बिल्कुल एक तरफा था। चीन चाय, सिल्क, नानकिन, कपड़ा आदि बेचता था। इसके बदले अमरीकी और अँग्रेजी रोआँ, चंदन, सूती कपड़े आदि बेचते थे। इंगलैंड का चीन के साथ मुख्य व्यापार अफीम (Opium) का था। आयात की जाने वाली वस्तुओं की सूची देखने से पता चलता है कि व्यापार प्रत्यक्ष नहीं, अपितु विकोणात्मक था। व्यापारियों को अनेक स्थानों पर अपनी वस्तुओं का विनियम करना पड़ता था। अमरीकियों को न केवल वस्तुओं को प्राप्त करना पड़ता था अफीम का व्यापार के भुगतान के लिए सोना-चाँदी भी

प्राप्त करना पड़ता था। अफीम का व्यापार होने से चाँदी प्राप्त करना जरूरी नहीं रह गया क्योंकि इससे व्यापार का व्यापारिक संतुलन अपने पक्ष में करने के लिए अंग्रेजों संतुलन हो जाता था। ने अन्य देशों के व्यापारियों के साथ मिलकर चीन में अफीम के सेवन का प्रचार किया। तम्बाकू के साथ मिलाकर अफीम प्रारंभ में मुफ्त वितरित की गई। कालांतर में चीनियों ने शुद्ध रूप में बड़ी मात्रा में इसका प्रयोग शुरू कर दिया। धीरे-धीरे अफीम की माँग बहुत बढ़ गई। 1800 से 1811 तक अफीम की 4016 पेटियाँ 1821 से 1828 तक 9708 पेटियाँ एवं 1828 से 1835 तक 18,712 पेटियाँ मंगाई जाती थी। एक पेटी में 133-1/2 पौंड अफीम होती थी। चीन में अधिकांश अफीम भारत से आती थी कुछ अफीम पश्चिया और तुर्की से मगाँई जाती थी। अमरीकी तुर्की अफीम का आयात करते थे। अफीम व्यापार

मे अंग्रेजो का बड़ा हाथ था क्योंकि वह उन्हे सुगमता से भारत से मिल जाती थी, जहाँ वृहत पैमाने पर इसकी खेती की जाती थी।

इस प्रकार चीन मे अफीम सेवन करने वालो की संख्या मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। कहा जाता है कि 1624 मे ही डचों ने चीन मे इसके सेवन का प्रचार किया था उस समय फारमोसा मे डचों का अस्थायी अधिकार था। एक बार जब चीनियों को अफीम-सेवन का स्वाद मालूम हो गया, तो इसका सेवन करना उनकी आदत बन गई। इसे राष्ट्रीय नैतिक मे जीवन मे कलंक भी मान लिया गया। अतः नैतिक और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से इसके सेवन का विरोध किया जाने लगा। 1729 और 1800 मे अफीम सेवन के विरुद्ध आदेश निकाले गए 1800 मे तो अफीम के आयात पर रोक लगा दी गई। किंतु इन प्रतिबंधो के बावजूद भी चीन मे अफीम का

तस्कर व्यापार जारी रहा। इसमें चीनी अधिकारी और विदेशी व्यापारी शामिल थे। अतः इस चोरबाजार को दूर करने के लिए 1820 के बाद पीकिंग की सरकार ने कैंटन में अफीम का व्यापार बन्द कर दिया। इससे व्यापारियों और चीनी अधिकारियों दोनों को कष्ट हुआ। अधिकारियों को दस्तूरी मिलने की संभावना कम हो गई। अतः उन्होंने आदेश की अपेक्षा करते हुए व्यापारियों को लिनटीन से अफीम से भरे अपने जहाजों को उतारने की अनुमति दे दी।

यह सत्य है कि विदेशियों ने चीन में अफीम-सेवन का प्रचार किया और इसे बढ़ावा दिया। किंतु इसके लिए चीनी सरकार भी कम उत्तरदायी न थी। दस्तूरी प्रथा काफी दोषपूर्ण थी। चीनी अधिकारी इसका बेजा लाभ उठाते थे तथा राजाज्ञाओं का उल्लंघन कर अफीम के अवैध व्यापार को बढ़ावा देते थे। शासन की विकेन्द्री

करण तथा अधिकारियों को स्वविवेक के अधिकार प्राप्त होने के कारण अफीम के आयात पर प्रतिबंध लगाना कठिन हो गया। साथ ही अफीम के सेवन को रोकना तो और भी कठिन था। अफीम के आयात नहीं होने पर भी चीनियों को सेवन के लिए अफीम मिल जाती थी। खुद चीन के दक्षिण-मध्यवर्ती और पश्चिमी प्रांतों में अफीम की खेती होती थी। अफीम सेवन बंद करने के पहले तो इसकी खेती बंद करनी थी। किन्तु, अफीम की खेती काफी लाभदायक थी। अफीम की माँग पूरे चीनी साम्राज्य में थी। अतः जब तक कृतसंकल्प होकर अधिकारी इसकी खेती बंद करने के लिए तैयार न थे, तब तक किसान इसके उत्पादन को कम करने के लिए तैयार न थे। अफीम उत्पादन का एक अन्य आर्थिक दुष्परिणाम यह पड़ा कि भूमि में खाद्यान्न उपजाने की जगह अफीम उपजाई

Scanned with CamScanner

जाने लगी! अतः देश में खाद्य समस्या निरन्तर बढ़ती गई।
चीन में अफीम व्यापार का एक दूसरा आर्थिक दुष्प
रिणाम भी उल्लेखनीय है। अंग्रेज व्यापारियों द्वारा
निर्यात की गई अफीम की कीमत उस साल की कीमत
से अधिक हो गई जो विदेशी व्यापारी चीनी से खरीदते
थे। इनका भुगतान चीनी व्यापारी चाँदी के रूप में करते
थे। 1800 में चीन में चाँदी की कमी महसूस की गई।
सर्वसाधारण में पारस्परिक विनिमय तो ताँबे के सिक्कों
के माध्यम से हो जाता था। परंतु राजकीय भुगतान
केवल चाँदी के सिक्कों के रूप में स्वीकार किया जाता था।
यह चाँदी तो विदेशों को जा रही थी। अतः चीनी
प्रशासन अफीम व्यापार को बंद करने के लिए कृत
संकल्प था।

(3) आंग्ल-चीनी संबंध - 1834-1840 - ब्रिटेन और चीन के

बीच युद्ध में अफीम एक कारण की अपेक्षा प्रसंग साबित हुआ। इसे समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम कैंटन में व्यापार की परिस्थितियों का पुनः संक्षेप में अध्ययन करें। बहुत दिनों से स्वतंत्र ब्रिटिश सरकार व्यापारी कैंटन में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त करने के लिए आवाज उठा रहे थे। वे भी अन्य विदेशी व्यापारियों की तरह वहाँ व्यापार करना चाहते थे। अतः 1834 में कैंटन में ईस्ट इंडिया कंपनी के अतिरिक्त अन्य पारिक एकाधिकार का उन्मूलन कर दिया गया। अब ईस्ट इंडिया कंपनी के अतिरिक्त अन्य अँग्रेज व्यापारी भी वहाँ व्यापार कर सकते थे। सुदूर पूर्व में अपने व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए ब्रिटिश सरकार को नया प्रबंध करना पड़ा। पहले जो काम कंपनी के एजेंट करते थे, उन कार्यों के संपादन के लिए तीन ब्रिटिश अधीक्षक नियुक्त किये गए।

Scanned with CamScanner